

सूरह माऊन^[1] - 107

سُورَةُ الْمَاعُونِ

सूरह माऊन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- इस सूरह की अन्तिम आयत में ((माऊन)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है लोगों को देने की साधारण आवश्यकता की चीजें।^[1]
- आयत 1 में उस के आचरण पर विचार करने के लिये कहा गया है जो प्रलय के दिन के प्रतिफल को नहीं मानता।
- आयत 2,3 में यह बताया गया है कि ऐसा ही व्यक्ति समाज के अनाथों तथा निर्धनों की कोई सहायता नहीं करता। और उन के साथ बुरा व्यवहार करता है।
- आयत 4 से 6 तक में उन की निन्दा की गई है जो नमाज़ पढ़ने में आलसी होते हैं। और दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ते हैं।
- और आयत 7 में उन की कंजूसी पर पकड़ की गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) क्या तुम ने उसे देखा
जो प्रतिकार (बदले) के दिन को
झुठलाता है?
2. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को
धक्का देता है।
3. और गरीब के लिये भोजन देने पर
नहीं उभारता।^[2]

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْذِّكْرِ ۚ

فَذَلِكَ الَّذِي يَدُّهُ الْيَتِيمَ ۚ

وَلَا يَعْصِ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۚ

- 1 इस सूरह का विषय यह बताना है कि परलोक पर ईमान न रखना किस प्रकार का आचरण और स्वभाव पैदा करता है।
- 2 (2-3) इन आयतों में उन काफ़िरों (अधर्मियों) की दशा बताई गई है जो

4. विनाश है उन नमाज़ियों के लिये^[1]
5. जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं।
6. और जो दिखावे (आडंबर) के लिये करते हैं।
7. तथा माऊन (प्रयोग में आने वाली मामूली चीज़) भी माँगने से नहीं देते।^[2]

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ
الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ
الَّذِينَ هُمْ يُرَآؤُونَ
وَيَسْتَعِينُونَ الْمَاعُونَ

परलोक का इन्कार करते हैं।

- 1 इन आयतों में उन मुनाफ़िकों (द्वय वादियों) की दशा का वर्णन किया गया है जो ऊपर से मुसलमान हैं परन्तु उन के दिलों में परलोक और प्रतिकार का विश्वास नहीं है।
इन दोनों प्रकारों के आचरण और स्वभाव को बयान करने से अभिप्राय यह बताना है कि: इन्सान में सदाचार की भावना परलोक पर विश्वास के बिना उत्पन्न नहीं हो सकती। और इस्लाम परलोक का सहीह विश्वास दे कर इन्सानों में अनाथों और गरीबों की सहायता की भावना पैदा करता है और उसे उदार तथा परोपकारी बनाता है।
- 2 आयत नं० 7 में मामूली चीज़ के लिये (माऊन) शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है साधारण माँगने के सामान: जैसे पानी, आग, नमक, डोल आदि। और आयत का अभिप्राय यह है कि: आखिरत का इन्कार किसी व्यक्ति को इतना तंग दिल बना देता है कि: वह साधारण उपकार के लिये भी तैयार नहीं होता।